उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान सीखने के प्रतिफल (कक्षा VI से VIII)

परिचय

उच्च प्राथमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय का प्रमुख उद्देश्य अपने आस-पास में होने वाली विभिन्न घटनाओं को विस्तार से समझना है। अपेक्षित है कि इस विषय के अंतर्गत बच्चों को विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों में रहने वाले लोगों और उनकी सामाजिक रीतियों से परिचित कराया जाए। सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण भूमिका बच्चों में करुणा, समानुभूति, विश्वास, शांति, सहयोग, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण जैसे अन्य मानवीय मूल्यों के प्रति संवेदना जगाना है।

यह अपने, अपने परिवार, अपने सामाजिक वातावरण के विभिन्न भोगौलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारकों के साथ अंतःक्रिया द्वारा विकसित होता है। बच्चों को विकास की गतिशीलता से परिचित कराना आवश्यक है, ताकि उनमें अन्य विषयों से उनके जुड़ाव को स्वतंत्र रूप से समझने की क्षमता, पर्याप्त जागरूकता और आवश्यक कौशलों का विकास हो सके।

पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ

यह आशा की जाती है कि उच्च प्राथमिक स्तर (कक्षा-8) के अंत तक बच्चे निम्नलिखित पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाओं को पूरा करने में समर्थ हों –

- उन तरीकों को पहचानना जिनके द्वारा राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक मुद्दे उनके दैनिक जीवन को समय-समय पर प्रभावित करते हैं।
- पृथ्वी को मानव तथा जीवों के एक आवास के रूप में समझना।
- अपने स्वयं के क्षेत्र से परिचित होना तथा विभिन्न प्रदेशों (स्थानीय से लेकर भूमंडलीय) की पारस्परिक निर्भरता को समझना।
- संसाधनों के स्थानीय वितरण तथा उनके संरक्षण को समझना।
- भारतीय इतिहास के विभिन्न कालों के ऐतिहासिक विकास को समझना। विभिन्न प्रकार के स्रोतों से इतिहासकार अतीत का अध्ययन कैसे करते हैं – इसे समझना।
- एक स्थान/क्षेत्र के विकास का दूसरे से संबंध स्थापित करते हुए ऐतिहासिक विविधता को समझना।
- भारतीय संविधान के मूल्यों और दैनिक जीवन में उनके महत्त्व को आत्मसात् करना।
- भारतीय लोकतंत्र और उसकी संस्थाओं एवं संघीय, प्रांतीय तथा स्थानीय स्तर की प्रक्रियाओं के प्रति समझ विकसित करना।
- परिवार, बाज़ार और सरकार जैसी संस्थाओं की सामाजिक, आर्थिक भूमिका से परिचित होना।
- राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण-प्रक्रियाओं में समाज के विभिन्न वर्गों के योगदान को पहचानना।

कक्षा VI (सामाजिक विज्ञान)

सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों को जोड़ों में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करें तथा निम्नलिखित प्रक्रियाओं के लिए प्रोत्साहित करें – • पृथ्वी की गतियों को समझने के लिए चित्रों, मॉडल और दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का प्रयोग। • खगोलीय परिघटनाओं, जैसे – तारे, ग्रह, उपग्रह (चाँद), ग्रहण को अपने माता-पिता/शिक्षक/ बड़ों की सहायता से देखकर समझना। • अक्षांशों एवं देशांतरों को समझने के लिए ग्लोब का प्रयोग। • स्थलमंडल, जलमंडल, वायुमंडल और जैवमंडल को समझने के लिए चित्रों का प्रयोग। • महाद्वीपों, महासागरों, सागरों, भारत के राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों, भारत तथा इसके पड़ोसी देशों, भारत के भौतिक स्वरूपों, जैसे – पर्वतों, पठारों, मैदानों, मरुस्थलों, नदियों इत्यादि की स्थिति को समझने के लिए मानचित्रों का अध्ययन। • ग्रहणों से जुड़े हुए पूर्वाग्रहों पर चर्चा। • विभिन्न प्रकार के स्रोतों और उनके चित्रों का प्रयोग करना, ताकि वे उन्हें देखकर, पढ़कर, समझकर और चर्चा कर यह जान सकें कि इतिहासकारों ने प्राचीन भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए इनकी व्याख्या कैसे की है। • शिकारी-संग्रहकर्ताओं, खाद्य उत्पादकों, हड़प्पा सभ्यता, जनपदों , महाजनपदों, साम्राज्यों , बुद्ध और महावीर के जीवन से संबंधित स्थानों, कला और वास्तुकला केंद्रों, भारत के बाहर जिन क्षेत्रों के साथ भारत के संबंध थे, ऐसे महत्वपूर्ण स्थानों, पुरास्थलों को मानचित्र में अंकित करना। • महाकाव्यों, रामायण, महाभारत, सिलप्पादिकाराम, मणिमेकालाई या कालिदास के कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का पता लगाना। • बौद्ध धर्म, जैन धर्म और अन्य विचारधाराओं के आधारभूत विचारों और केंद्रीय मूल्यों, वर्तमान में इनकी प्रासंगिकता — प्राचीन भारत में कला और वास्तुकला के विकास, संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में भारत के योगदान पर चर्चा करना।	**बच्चे –** • तारों, ग्रहों, उपग्रहों, जैसे – सूर्य, पृथ्वी तथा चंद्रमा में अंतर करते हैं। • पृथ्वी को एक विशिष्ट खगोलीय पिंड के रूप में समझते हैं, क्योंकि पृथ्वी के विभिन्न भागों विशेष रूप से जैवमंडल में जीवन पाया जाता है। • दिन और रात तथा ऋतुओं की समझ प्रदर्शित करते हैं। • समतल सतह पर दिशाएँ अंकित करते हैं तथा विश्व के मानचित्र पर महाद्वीपों और महासागरों को चिह्नित करते हैं। • अक्षांशों और देशांतरों, जैसे – ध्रुवों, विषुवत् वृत्त, कर्क व मकर रेखाओं, भारत के राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों अन्य पड़ोसी देशों को ग्लोब एवं विश्व के मानचित्र पर पहचानते हैं। • भारत के मानचित्र पर भौतिक स्वरूपों, जैसे – पर्वतों, पठारों, मैदानों, नदियों, मरुस्थल इत्यादि को अंकित करते हैं। • अपने आस-पड़ोस का मानचित्र बनाते हैं और उस पर मापक, दिशाएँ तथा अन्य विशेषताओं को रूढ़ चिह्नों की सहायता से दिखाते हैं। • ग्रहण से संबंधित अंधविश्वासों को तर्कपूर्ण रूप से परखते हैं। • बच्चे विभिन्न प्रकार के स्रोतों (पुरातात्विक, साहित्यिक आदि) को पहचानते हैं और इस अवधि के इतिहास के पुनर्निर्माण में उनके उपयोग का वर्णन करते हैं। • महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पुरास्थलों तथा अन्य स्थानों को भारत के एक रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करते हैं। • प्रारंभिक मानव संस्कृतियों की विशिष्ट विशेषताओं को पहचान पाते हैं और उनके विकास के बारे में बात करते हैं। • महत्वपूर्ण साम्राज्यों, राजवंशों के विशिष्ट योगदानों को उदाहरणों के साथ सूचीबद्ध करते हैं, जैसे – अशोक के शिलालेख, गुप्त सिक्के, पल्लवों द्वारा निर्मित रथ मंदिर आदि। • प्राचीन काल के दौरान हुए व्यापक बदलावों की व्याख्या करते हैं। उदाहरण के लिए, शिकार-संग्रहण की अवस्था, कृषि की शुरुआत, सिंधु नदी किनारे के आरंभिक शहर आदि और एक स्थान पर हुए बदलावों को दूसरे स्थान पर हुए बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं।

• विभिन्न ऐतिहासिक विषयों, जैसे – कलिंग युद्ध के बाद अशोक के ह्दय परिवर्तन तथा समकालीन साहित्यिक कार्यों में वर्णित किसी घटना या प्रकरण पर 'रोल प्ले' करना। • राज्य संस्था के विकास, गण अथवा संघ की कार्यप्रणाली, संस्कृति के क्षेत्र में विभिन्न साम्राज्यों और राजवंशों के योगदान, भारत के बाहर के क्षेत्रों के साथ भारत के संपर्क और इन संपर्कों के प्रभाव आदि विभिन्न विषयों पर परियोजना कार्य करना और कक्षा में उन पर चर्चा करना। • प्रारंभिक मानव बस्तियों तथा हड़प्पा सभ्यता के भौतिक अवशेषों को देखने के लिए संग्रहालयों में जाना और इन संस्कृतियों के बीच निरंतरता और परिवर्तन पर चर्चा करना। • विविधता, भेदभाव, सरकार एवं आजीविका की अवधारणाओं पर विचार-विमर्श में भाग लेना। • समाज, स्कूल, परिवार आदि में लोगों के साथ उचित / अनुचित व्यवहार पर ध्यान देना। • पुस्तक में दिए पाठ का अध्ययन तथा किसी ग्राम पंचायत अथवा नगरपालिका / नगरनिगम के कार्यकलाप देखना (विद्यार्थी के निवास स्थान के अनुसार)। • समाज में सरकार की भूमिका तथा किसी परिवार और किसी गाँव / शहर के मामलों का अंतर समझना। • स्थानीय क्षेत्र/गाँव में रोज़गार संबंधी विशेष अध्ययनों का वर्णन करना।	• उस समय की साहित्यिक रचनाओं में वर्णित मुद्दों, घटनाओं, व्यक्तित्वों का वर्णन करते हैं। • धर्म, कला, वास्तुकला आदि के क्षेत्र में भारत का बाहर के क्षेत्रों के साथ संपर्क और उस संपर्क के प्रभावों के बारे में बताते हैं। • संस्कृति और विज्ञान के क्षेत्र में, जैसे – खगोल विज्ञान, चिकित्सा, गणित और धातुओं का ज्ञान आदि में भारत के महत्वपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हैं। • विभिन्न ऐतिहासिक घटनाओं से संबंधित जानकारी का समन्वय करते हैं। • प्राचीन काल के विभिन्न धर्मों और विचारों के मूल तत्वों और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं। • अपने आस-पास की मानवीय विविधताओं के विभिन्न रूपों का वर्णन करते हैं। • अपने आस-पास मानवीय विविधताओं के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करते हैं। • विभिन्न प्रकार के भेद-भाव को पहचानते हैं और उनकी प्रकृति एवं स्रोत को समझते हैं। • समानता और असमानता के विभिन्न रूपों में भेद करते हैं और उनके प्रति स्वस्थ भाव रखते हैं। • सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं, विशेष कर स्थानीय स्तर पर। • सरकार के विभिन्न स्तरों – स्थानीय, प्रांतीय और संघीय, को पहचानते हैं। • स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में ग्रामीण एवं शहरी स्थानीय शासकीय निकायों के कार्यों का वर्णन करते हैं। • ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में चल रहे विभिन्न रोज़गारों की उपलब्धता के कारणों का वर्णन करते हैं।

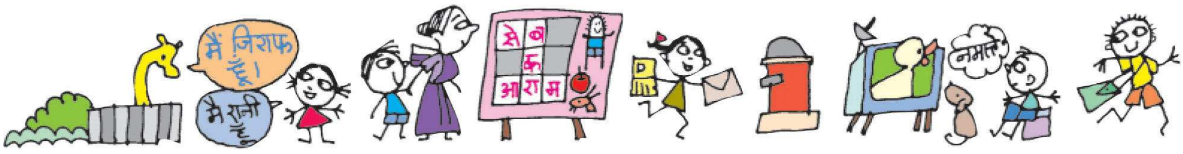

कक्षा VII (सामाजिक विज्ञान)

सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों को जोड़ों में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करें तथा निम्नलिखित प्रक्रियाओं के लिए प्रोत्साहित करें – • मुख्य संकल्पनाओं, जैसे – पारितंत्र, वायुमंडल, आपदाओं, मौसम, जलवायु, जलवायु प्रदेश इत्यादि को बच्चों के अनुरूप संसाधनों द्वारा समझना। • अपने आस-पास के पर्यावरण के विविध पहलुओं, जैसे – पर्यावरण के प्राकृतिक व मानवीय घटकों, विभिन्न पारितंत्रों/जलवायु प्रदेशों के पादपों और जंतुओं, विभिन्न प्रकार के प्रदूषणों, अलवण जल के स्रोतों इत्यादि को देखना व समझना तथा अपने अनुभवों को आपस में बाँटना व चर्चा करना। • ग्लोब तथा मानचित्र पर ऐतिहासिक स्थानों/राज्यों, जलवायु प्रदेशों और अन्य संसाधनों की स्थिति को ढूँढ़ना। • पृथ्वी की आंतरिक संरचना, विभिन्न स्थलरूपों तथा महासागरीय जल की गतियों को समझने के लिए चित्रों/मॉडलों/ दृश्य-श्रव्य सामग्रियों का उपयोग करना। • विभिन्न स्थल रूपों को दर्शाने के लिए मॉडल बनाना। • अपने आस-पास के विभिन्न शैलों को पहचानना व उनके नमूने एकत्र करना। • भूकंप या अन्य आपदाओं से संबंधित *'मॉक ड्रिल'* में भाग लेना। • विभिन्न आपदाओं, जैसे – सुनामी, बाढ़, भूकंप इत्यादि के प्राकृतिक व मानवीय कारणों पर चर्चा करना। • भारत सहित विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन से संबंधित समानताओं और असमानताओं पर चर्चा करना। • पुस्तकों / स्थानीय वातावरण में उपलब्ध इतिहास के विभिन्न स्रोतों की पहचान करना, जैसे – पांडुलिपि / नक्शे / चित्रण / पेंटिंग / ऐतिहासिक स्मारकों / फ़िल्मों, जीवनी नाटकों, टेली-धारावाहिकों, लोक नाटकों और इनकी व्याख्या कर उस काल विशेष को समझने का प्रयास करना। • नए राजवंशों के उद्भव के साथ परिचित होना और इस समय के दौरान घटी महत्वपूर्ण घटनाओं का पता लगाने के लिए एक घटनाक्रम तैयार करना।	**बच्चे –** • चित्र में पृथ्वी की प्रमुख आंतरिक परतों, शैलों के प्रकार तथा वायुमंडल की परतों को पहचानते हैं। • ग्लोब अथवा विश्व के मानचित्र पर विभिन्न जलवायु प्रदेशों के वितरण तथा विस्तार को बताते हैं। • विभिन्न आपदाओं, जैसे – भूकंप, बाढ़, सूखा आदि के दौरान किए जाने वाले बचाव कार्य को विस्तार से बताते हैं। • विभिन्न कारकों द्वारा निर्मित स्थलरूपों के बनने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं। • वायुमंडल के संघटन एवं संरचना का वर्णन करते हैं। • पर्यावरण के विभिन्न घटकों तथा उनके पारस्परिक संबंधों का वर्णन करते हैं। • अपने आस-पास प्रदूषण के कारकों का विश्लेषण करते हैं तथा उन्हें कम करने के उपायों की सूची बनाते हैं। • विभिन्न जलवायु एवं स्थलरूपों में पाए जाने वाले पादपों एवं जंतुओं की विभिन्नताओं के कारणों को बताते हैं। • आपदाओं तथा विपत्ति के कारकों पर विचार व्यक्त करते हैं। • प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – वायु, जल, ऊर्जा, पादप एवं जंतुओं के संरक्षण के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं। • विश्व के विभिन्न जलवायु प्रदेशों में रहने वाले लोगों के जीवन तथा भारत के विभिन्न भागों मे रहने वाले लोगों के जीवन में अंतर्संबंध स्थापित करते हैं। • विशिष्ट क्षेत्रों के विकास को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करते हैं। • इतिहास में विभिन्न कालों का अध्ययन करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले स्रोतों के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। • मध्यकाल के दौरान एक स्थान पर हुए महत्वपूर्ण ऐतिहासिक बदलावों को दूसरे स्थान पर होने वाले बदलावों के साथ जोड़कर देखते हैं। • लोगों की आजीविका के पैटर्न और निवास क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति के बीच संबंध का वर्णन करते हैं। उदाहरण के लिए, जनजातियों, खानाबदोशों और बंजारों की। • मध्यकाल के दौरान हुए सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों का विश्लेषण करते हैं।

- ऐतिहासिक अवधि अथवा महत्वपूर्ण व्यक्तियों, जैसे – रज़िया सुल्तान, अकबर आदि के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को नाटक के रूप में प्रस्तुत करना।
- मध्यकालीन समाज में हुए बदलावों पर विचार करना और वर्तमान समय के साथ इसकी तुलना करना।
- राजवंशों / राज्यों / प्रशासनिक सुधारों और किसी काल की वास्तुशिल्प विशेषताओं, जैसे– ख़िलजी, मुगल आदि पर परियोजनाएँ तैयार करना।
- भक्ति या सूफ़ी संतों की कविताओं / भजनों, कीर्तनों या क़व्वालियों, संतों से जुड़े दरगाहों / गुरुद्वारों / मंदिरों का भ्रमण करना और विभिन्न धर्मों के बुनियादी सिद्धांतों पर चर्चा के माध्यम से नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों के उद्भव में योगदान देने वाले कारकों को समझने का प्रयास करना।
- लोकतंत्र, समानता, राज्य सरकार, लिंग, मीडिया और विज्ञापन संबंधी अवधारणाओं पर चर्चा में भाग लेना।
- संविधान, उसकी प्रस्तावना, समानता के अधिकार और उस के लिए संघर्ष के महत्व पर आरेख और चित्रों से पोस्टर तैयार करना।
- राज्य / केंद्रशासित प्रदेश के विधानसभा क्षेत्र का नक्शा देखना।
- 'मॉक' मतदान (mock poll) और युवा विधान सभा का आयोजन करना।
- मीडिया की भूमिका के बारे में बहस करना।
- लोकतंत्र में समानता, लड़कियों द्वारा भेदभाव का सामना करना जैसे – विषयों पर गीतों और कविताओं के साथ नाट्य प्रदर्शन करना।
- ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में लड़कियों और महिलाओं के जीवन स्तर के बारे में, वर्णनात्मक और आलोचनात्मक लेखन से अपने विचारों को व्यक्त करना।
- एक बेहतर समाज के लिए काम करने वाली महिलाओं के बारे में मौखिक और लिखित प्रस्तुतियाँ देना।
- राज्य सरकार द्वारा चुनिंदा मुद्दों (जैसे – स्वास्थ्य, भोजन, कृषि, सड़कों) पर काम और अपने निर्वाचन क्षेत्र के विधायक द्वारा किए गए कुछ सार्वजनिक कार्यों के बारे में अख़बारी कोलाज तैयार करना।

- विभिन्न राज्यों द्वारा सैन्य नियंत्रण हेतु अपनाए गए प्रशासनिक उपायों और रणनीतियों का विश्लेषण करते हैं, जैसे – ख़िलजी, तुगलक़, मुगल आदि।
- विभिन्न शासकों की नीतियों की तुलना करते हैं।
- मंदिरों, मकबरों और मस्जिदों के निर्माण में इस्तेमाल की गईं विशिष्ट शैलियों और तकनीक की विशेषताओं का उदाहरणों के साथ वर्णन करते हैं।
- उन कारकों का विश्लेषण करते हैं जिससे नए धार्मिक विचारों और आंदोलनों (भक्ति और सूफ़ी) का उद्‌भव हुआ।
- भक्ति और सूफ़ी संतों के काव्य में कही बातों से मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को समझने का प्रयास करते हैं।
- लोकतंत्र में समानता का महत्त्व समझते हैं।
- राजनीतिक समानता, आर्थिक समानता और सामाजिक समानता के बीच अंतर करते हैं।
- समानता के अधिकार के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों की व्याख्या करते हैं।
- स्थानीय सरकार और राज्य सरकार के बीच अंतर करते हैं।
- विधान सभा के चुनाव की प्रक्रिया का विभिन्न चरणों में वर्णन करते हैं।
- राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के विधान सभा निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र देखते हैं और स्थानीय विधायक का नाम बताते हैं।
- समाज के विभिन्न वर्गों की महिलाओं के सामने आने वाली कठिनाइयों के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं।
- भारत के अलग-अलग क्षेत्रों से आने वाली विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल करने वाली महिलाओं को पहचानते हैं।
- विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के योगदान को उपयुक्त उदाहरणों के साथ वर्णित करते हैं।
- समाचार-पत्रों के समुचित उदाहरणों से मीडिया के कामकाज की व्याख्या करते हैं।
- विज्ञापन बनाते हैं।
- विभिन्न प्रकार के बाज़ारों में अंतर बताते हैं।
- विभिन्न बाज़ारों से होकर वस्तुएँ कैसे दूसरी जगहों पर पहुँचती हैं – यह पता लगाते हैं।

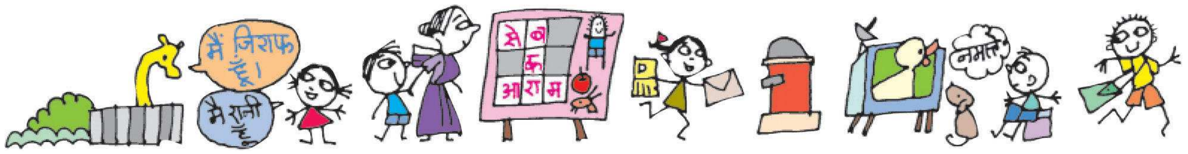

• विज्ञापनों के प्रकारों के बारे में अकेले, जोड़ी या समूह में प्रोजेक्ट बनाना और जल व ऊर्जा को बचाने की ज़रूरत पर विज्ञापन बनाना। • अपने इलाके में स्वच्छता, सार्वजनिक स्वास्थ्य और सड़क सुरक्षा के बारे में जागरूकता अभियान चलाना। • अपने इलाके में राज्य सरकार / संघ-शासित प्रशासन के अधीन किसी कार्यालय (जैसे – बिजली बिल कार्यालय) जाकर उसका कार्य देखना और उस पर एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करना। • स्थानीय बाज़ार तथा बड़े बाज़ारों में जाकर उस समूह के बारे में जानकारियाँ हासिल करना और उन पर विषय अध्ययन तथा प्रोजेक्ट तैयार करना।	

कक्षा VIII (सामाजिक विज्ञान)

सीखने-सिखाने की प्रस्तावित प्रक्रियाएँ	सीखने के प्रतिफल (Learning Outcomes)
सभी शिक्षार्थियों को जोड़ों में/समूहों में/व्यक्तिगत रूप से अध्ययन के लिए अवसर प्रदान करें तथा निम्नलिखित प्रक्रियाओं के लिए प्रोत्साहित करें – • अपने आस-पास के प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – भूमि, मृदा, जल, प्राकृतिक वनस्पति, वन्य जीवन, खनिज, ऊर्जा संसाधनों तथा विभिन्न प्रकार के उद्योगों के वितरण से संबंधित सूचनाएँ एकत्रित करना तथा भारत और विश्व में इन संसाधनों के वितरण से संबंध स्थापित करना। • अपने आस-पड़ोस/जिले/राज्य में प्रचलित विभिन्न कृषि पद्धतियों के बारे में जानकारी एकत्रित करना तथा किसानों से इनके बारे में बातचीत करना। • प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा उनके संरक्षण एवं अन्य राज्यों/देशों में कृषि की विविध पद्धतियों को समझने के लिए चित्रों/समाचार-पत्रों / दृश्य-श्रव्य संसाधनों का उपयोग करना। • प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधनों के संरक्षण पर परियोजना/प्रोजेक्ट बनाना। • वनों की आग (दावानल), भूस्खलन, औद्योगिक आपदाओं के घटित होने के प्राकृतिक तथा मानवीय कारणों तथा उन पर नियंत्रण के बारे में अपने सहपाठियों से चर्चा करना। • विश्व के प्रमुख कृषि क्षेत्रों, औद्योगिक देशों / प्रदेशों तथा जनसंख्या के स्थानिक वितरण को समझने के लिए एटलस/मानचित्रों का उपयोग करना। • काल विशेष के व्यक्तियों और समुदायों के अनुभवों की कहानियाँ पढ़ना। • घटनाओं और प्रक्रियाओं पर समूह में तथा पूरी कक्षा में चर्चा करना। • विभिन्न मुद्दों और घटनाओं पर सवाल उठाना, जैसे – 'इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीय शासकों के बीच विवादों में खुद को शामिल करना क्यों आवश्यक महसूस किया?' • ऐतिहासिक महत्व के स्थानों की यात्राएँ करना, विशेष रूप से उन स्थानों की जो औपनिवेशिक प्रशासन और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के केंद्रों से जुड़े रहे हैं।	**बच्चे –** • कच्चे माल, आकार तथा स्वामित्व के आधार पर विभिन्न प्रकार के उद्योगों को वर्गीकृत करते हैं। • अपने क्षेत्र/राज्य की प्रमुख फसलों, कृषि के प्रकारों तथा कृषि पद्धतियों का वर्णन करते हैं। • विश्व के मानचित्र पर जनसंख्या के असमान वितरण के कारणों की व्याख्या करते हैं। • वनों की आग (दावानल), भूस्खलन, औद्योगिक आपदाओं के कारणों और उनके जोखिम को कम करने के उपायों का वर्णन करते हैं। • महत्वपूर्ण खनिजों, जैसे – कोयला तथा खनिज तेल के वितरण को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं। • पृथ्वी पर प्राकृतिक तथा मानव निर्मित संसाधनों के असमान वितरण का विश्लेषण करते हैं। • सभी क्षेत्रों में विकास को बनाए रखने के लिए प्राकृतिक संसाधनों, जैसे – जल, मृदा, वन इत्यादि के विवेकपूर्ण उपयोग के संबंध को तर्कपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते हैं। • ऐसे कारकों का विश्लेषण करते हैं जिनके कारण कुछ देश प्रमुख फसलों, जैसे – गेहूँ, चावल, कपास, जूट इत्यादि का उत्पादन करते हैं। बच्चे इन देशों को विश्व के मानचित्र पर अंकित करते हैं। • विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में कृषि के प्रकारों तथा विकास में संबंध स्थापित करते हैं। • विभिन्न देशों/भारत/राज्यों की जनसंख्या को दंड आरेख (बार डायग्राम) द्वारा प्रदर्शित करते हैं। • स्रोतों के इस्तेमाल, भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न क्षेत्रों के लिए प्रयुक्त नामावली और व्यापक बदलावों के आधार पर 'आधुनिक काल' का 'मध्यकाल' और 'प्राचीनकाल' से अंतर करते हैं। • इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी कैसे सबसे प्रभावशाली शक्ति बन गई, बताते हैं। • देश के विभिन्न क्षेत्रों में औपनिवेशिक कृषि नीतियों के प्रभाव में अंतर बताते हैं, जैसे – 'नील विद्रोह।' • उन्नीसवीं शताब्दी में विभिन्न आदिवासी समाज के रूपों और पर्यावरण के साथ उनके संबंधों का वर्णन करते हैं।

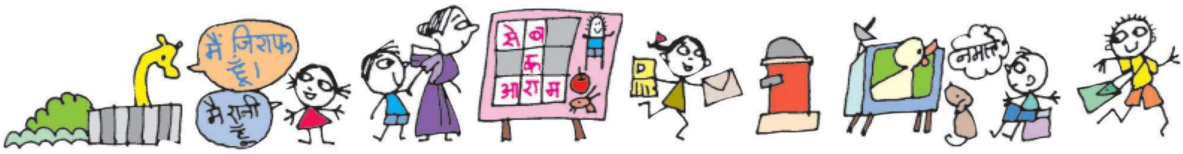

- भिन्न-भिन्न 'परियोजना कार्य' तथा 'गतिविधियाँ' करना, जैसे – (अ) 'गांधी जी के अहिंसा के विचार और भारत के राष्ट्रीय आंदोलन पर इसका प्रभाव' पर एक निबंध लिखना, (ब) 'भारत के राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण घटनाओं' पर एक समयरेखा (टाइम लाइन) तैयार करना, (स) 'चौरी चौरा घटना' पर एक रोल प्ले करना और (द) 'औपनिवेशिक काल के दौरान वाणिज्यिक फ़सल की खेती से सबसे अधिक प्रभावित क्षेत्रों' को भारत के एक रूपरेखा मानचित्र पर अंकित करना।
- विभिन्न आंदोलनों के इतिहास को समझने और उनके पुनर्निर्माण के लिए देशी और ब्रिटिश दस्तावेज़ों, आत्मकथाओं, जीवनियों, उपन्यासों, चित्रों, फ़ोटोग्राफ़, समकालीन लेखन, दस्तावेज़ों, समाचार-पत्रों की रिपोर्ट, फ़िल्मों, वृत्तचित्रों और हाल के लेखन जैसे स्रोतों से परिचित होना।
- शैक्षणिक रूप से अभिनव और मानदंड-संदर्भित प्रश्नों से परिचित कराना, जैसे – पलासी की लड़ाई के क्या कारण थे?
- संविधान, संसद, न्यायपालिका और उपेक्षितों से संबंधित चर्चा में भाग लेना।
- भारत के संविधान, इसकी प्रस्तावना, संसदीय सरकार, शक्तियों के पृथक्करण और संघवाद के महत्त्व पर आरेख एवं चित्रों के साथ पोस्टर तैयार करना तथा मौखिक और लिखित प्रस्तुति देना।
- कक्षा/ विद्यालय/ घर/ समाज में स्वतंत्रता, समता और बंधुता के सिद्धांतों का अभ्यास कैसे किया जा रहा है, इस पर बहस करना।
- मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्यों के बारे में (अकेले, जोड़े या समूह में) प्रोजेक्ट बनाना।
- राज्यसभा की टीवी शृंखला संविधान और गांधी, सरदार, डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जैसी फ़िल्में देखना और चर्चा करना।
- राज्य / केंद्रशासित प्रदेश के संसदीय क्षेत्र का मानचित्र देखना।
- आदर्श आचार संहिता के साथ 'मॉक' मतदान (mock poll) और बाल संसद का आयोजन करना।
- अपने मोहल्ले में पंजीकृत मतदाताओं की सूची तैयार करना।
- मतदान के महत्व के बारे में अपने मोहल्ले में एक जागरूकता अभियान चलाना।
- अपने निर्वाचन क्षेत्र के सांसद द्वारा किए गए कुछ सार्वजनिक कार्यों का पता लगाना।

- आदिवासी समुदायों के प्रति औपनिवेशिक प्रशासन की नीतियों की व्याख्या करते हैं।
- 1857 के विद्रोह की शुरुआत, प्रकृति और फैलाव और इससे मिले सबक का वर्णन करते हैं।
- औपनिवेशिक काल के दौरान पहले से मौजूद शहरी केंद्रों और हस्तशिल्प उद्योगों के पतन और नए शहरी केंद्रों और उद्योगों के विकास का विश्लेषण करते हैं।
- भारत में नयी शिक्षा प्रणाली के संस्थानीकरण के बारे में बताते हैं।
- जाति, महिला, विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह, सामाजिक सुधार से जुड़े मुद्दों और इन मुद्दों पर औपनिवेशिक प्रशासन के कानूनों और नीतियों का विश्लेषण करते हैं।
- कला के क्षेत्र में आधुनिक काल के दौरान हुई प्रमुख घटनाओं की रूपरेखा तैयार करते हैं।
- 1870 के दशक से लेकर आज़ादी तक भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की रूपरेखा तैयार करते हैं।
- राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण बदलावों का विश्लेषण करते हैं।
- भारत के संविधान के संदर्भ में अपने क्षेत्र में सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों का विश्लेषण करते हैं।
- मौलिक अधिकार और मौलिक कर्तव्यों को समुचित उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं।
- मौलिक अधिकारों की अपनी समझ से किसी दी गई स्थिति, जैसे – बाल अधिकार के उल्लंघन, संरक्षण और प्रोत्साहन की स्थिति को समझते हैं।
- राज्य सरकार और केंद्र सरकार के बीच अंतर करते हैं।
- लोकसभा के चुनाव की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं।
- राज्य/ संघ शासित प्रदेश के संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के मानचित्र पर अपना निर्वाचन क्षेत्र पहचान सकते हैं और स्थानीय सांसद का नाम जानते हैं।
- कानून बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करते हैं (उदाहरणार्थ, घरेलू हिंसा से स्त्रियों का बचाव अधिनियम, सूचना का अधिकार अधिनियम, शिक्षा का अधिकार अधिनियम)।
- भारत में न्यायिक प्रणाली की कार्यविधि का कुछ प्रमुख मामलों का उदाहरण देकर वर्णन करते हैं।
- एक प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) दर्ज करने की प्रक्रिया को प्रदर्शित करते हैं।

• प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफ.आई.आर.) फ़ॉर्म की सामग्री का अध्ययन करना। • मुकदमों में न्याय करने में न्यायाधीशों की भूमिका के बारे में वर्णनात्मक और आलोचनात्मक लेखन द्वारा अपने विचार व्यक्त करना। • स्त्रियों, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, धार्मिक/भाषाई अल्पसंख्यकों, विकलांगों, विशेष ज़रूरतों वाले बच्चों, स्वच्छता कर्मचारियों और अन्य वंचित वर्गों के मानवाधिकारों के उल्लंघन, संरक्षण और प्रोत्साहन पर फ़ोकस समूह-चर्चाएँ आयोजित करना। • 'आई एम कलाम' (हिंदी, 2011) फ़िल्म देखना और चर्चा करना। • बाल श्रम, बाल अधिकार और भारत में आपराधिक न्याय प्रणाली के बारे में नाट्य प्रदर्शन करना। • अपने इलाके में केंद्र सरकार के किसी कार्यालय (जैसे – पोस्ट ऑफ़िस) जाकर वहाँ का कामकाज देखना और एक संक्षिप्त रिपोर्ट तैयार करना। • सार्वजनिक सुविधाएँ और पानी, स्वच्छता, बिजली की उपलब्धता में असमानता के कारणों पर साथियों के साथ अनुभव साझा करना। • सरकार जनसुविधाएँ उपलब्ध कराने की ज़िम्मेदारी क्यों ले, इस पर वाद-विवाद करना। • कानून के पालन और मुआवज़े में लापरवाही के उदाहरण रूप में समाचार-पत्र की कतरनें या किसी मामले का अध्ययन (केस स्टडी) को बच्चों को उपलब्ध करवाना। • आर्थिक गतिविधियों के नियमन में सरकार की भूमिका पर समूह-चर्चा, जैसे – भोपाल गैस त्रासदी के कारणों का विश्लेषण करना।	• अपने क्षेत्र के सुविधा वंचित वर्गों की उपेक्षा के कारणों और परिणामों का विश्लेषण करते हैं। • पानी, सफ़ाई, सड़क, बिजली आदि जन-सुविधाएँ उपलब्ध कराने में सरकार की भूमिका की पहचान करते हैं। • आर्थिक गतिविधियों के नियमन में सरकार की भूमिका का वर्णन करते हैं।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए (सामाजिक विज्ञान)

- पर्यावरण अध्ययन एवं सामाजिक विज्ञान के अध्ययन के बाद अपेक्षित परिणाम पाने के लिए कुछ विद्यार्थियों को बोलती किताबें (Talking Books), ऑडियो-टेप, डेजी किताबों के रूप में सहायता की आवश्यकता पड़ सकती है। इसके साथ ही उन्हें अपने विचारों को लिखने या अभिव्यक्त करने के लिए अन्य वैकल्पिक संवाद के तरीके, जैसे – सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (I.C.T.) अथवा बोलना, क्रिया कलापों का समायोजन अथवा गतिविधि चित्रों को समझने के लिए दृश्य सूचनाएँ या शिक्षा के विभिन्न साधनों का उपयोग तथा विभिन्न भोगौलिक संकल्पनाओं, विशेषताओं और पर्यावरण को समझने में सहायता प्रदान करने के लिए विशेष मदद की आवश्यकता हो सकती है।

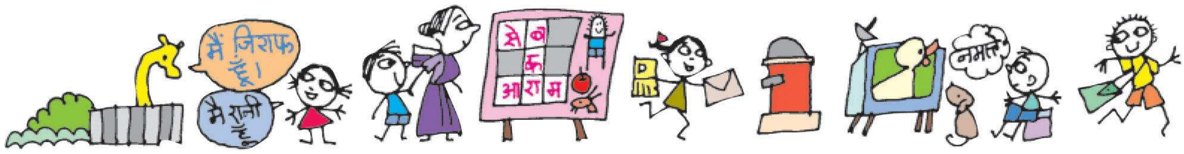

- साामूहिक प्रोजेक्ट एवं अन्य कार्यों के माध्यम से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को कक्षा की गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए सक्षम बनाया जा सकता है।
- विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए विभिन्न संसाधन, जैसे– स्पर्शी चित्र (टैक्टाइल) मानचित्र, बोलती किताबें (Talking Books), दृश्य-श्रव्य सामग्रियाँ, ब्रेल का प्रयोग किया जा सकता है। इस दस्तावेज़ में शैक्षिक प्रक्रियाओं एवं सीखने के प्रतिफल में और भी जोड़ने की उल्लिखित गुंजाइश है। शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने विद्यार्थियों के मूल्यांकन हेतु सीखने के प्रतिफल को निरंतर सुधारने के लिए समुचित शैक्षिक प्रक्रियाएँ स्वयं भी बनाएँ और उनका पालन करें ताकि विद्यार्थियों का मूल्यांकन हो।

दृष्टिबाधित बच्चों के लिए

- भोगौलिक शब्दों और संकल्पनाओं, जैसे– अक्षांश, देशांतर, दिशाएँ आदि के लिए मौखिक विषय सामग्री।
- मानचित्र अध्ययन, आरेख, चित्र, पेंटिंग, अभिलेख, प्रतीक तथा अन्य वास्तुकलाओं का आरेखीय एवं दृश्यात्मक वर्णन आदि।
- पर्यावरण और स्थान, वनस्पति और वन्य जीवन, संसाधनों का वितरण और विभिन्न सेवाओं के बारे में समझना।
- संदर्भ सामग्री, जैसे – वर्तनी सूची, अध्ययन के प्रश्न, महत्वपूर्ण संदर्भ, अन्य सूचनाएँ जिनकी विद्यार्थियों को ज़रूरत पड़ सकती हैं, उन्हें उभरे आकार अथवा इन सभी सामग्रियों को उनके आवश्यकता अनुरूप बनाकर उपलब्ध करवाया जा सकता है।

श्रवणबाधित बच्चों के लिए

- तकनीकी शब्दों, अमूर्त धारणाएँ, तथ्यों, तुलनाओं, कार्यकारण संबंधों और विभिन्न घटनाओं के तिथिक्रमों को समझना।
- इतिहास और नागरिक शास्त्र जैसे विषयों की कठिन सामग्री (पाठ्यपुस्तकें/स्रोत सामग्री) को पढ़ना।
- पाठ के आधार पर समझ बनाना।

संज्ञानात्मक रूप से बाधित तथा बौद्धिक असमर्थता वाले बच्चों के लिए

- लिखित कार्य, चित्र, चार्ट, आरेख एवं मानचित्र की उपलब्धता, विशेष रूप से बौद्धिक असमर्थता वाले विद्यार्थियों के लिए परिचलन, 'वीजुअल स्पेशल', 'वीजुअल प्रोसेसिंग।'
- सूचनाओं के संग्रहों में से उपयोगी सूचनाओं को निकालना। पढ़ने में कठिनाई महसूस करने वाले बच्चों के लिए इतिहास जैसे कठिन विषय अकसर चुनौती के रूप में होते है।
- घटनाक्रम और उनके आपसी संबंधों को याद रखना।
- अमूर्त अवधारणाओं को समझना और उनकी व्याख्या करना।
- पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री को समाज और परिवेश के साथ जोड़कर समझना।